

बहु वहां छोटे से छोटे कर्मचारी से लेकर बड़े से बड़े प्रबन्धकारी में पाई जाती है। चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी से लेकर बेयरमैन महोदय में समान रूप से पाई जाती है। सभी निष्ठा-पूर्वक देश की रक्षा के लिए तैयार हैं। यह भी बड़ी प्रसन्नता की बात है कि आज हमारे रेलवे बोर्ड के जो बेयरमैन हैं वे अत्यन्त अनुभवी हैं और चतुर्थ श्रेणी से लेकर ऊपर की श्रेणी तक के लोगों के दुःखदर्द को समझते हैं। उन सबकी विचारधारा को वे जानते हैं। उनके अनुभव से और मंत्री जी की दक्षता और विद्वता से जिस प्रकार का यहां कार्य चलेगा उससे देश को इस संकट के काल में बड़ी भारी सहायता मिलेगी।

मैं उस समय भी जब प्रतिरिक्त व्यय की मांगें चल रही थीं कहना चाहता था कि प्रतिरिक्त व्यय की और मंत्री महोदय का ध्यान जाना चाहिये, प्रतिरिक्त व्यय का कोई प्रौचित्य होना चाहिये, कोई प्रावश्यकता होनी चाहिये। अब सारे दूसरे मंत्रालयों में, विभागों में बचत का क्रम चलता है तो यहां रेलों के प्रन्दर भी बचत का प्रभाव होना चाहिये, यहां भी वही क्रम चलना चाहिये। हमें बचत दिखाई देनी चाहिये। लेकिन मैं नहीं समझता हूं कि आज यह दिखाई दे रही है। इसलिए उधर ध्यान जाना बहुत प्रावश्यक है।

जहां तक पूरक मांग का सम्बन्ध है प्रापण सांकेतिक दृष्टि से ही यहां पर पूरक मांग पेश की है। बात मामूलों की है। मैं सांकेतिक मांग का समर्थन करता हूं। आज की संकटकी घड़ी में फौजी साज-सामान, फौजी जवानों को रेलों द्वारा और हवाई जहाजों द्वारा जो लाने से जाने का काम है और जो बोझा प्रापण के ऊपर पड़ा है, उसे मैं बोझा नहीं मानता हूं वह प्रापण उत्तरदायित्व है और उस उत्तरदायित्व को प्रापणको निभाना है। इसी तरह से राष्ट्र की एकता कायम रह सकती है। हमारे मंत्री भी प्रापण खास कर पाटिल जी अपनी पृष्ठा के लिए, अपनी विद्वता के लिए महानुर है और मैं

चाहता हूं कि इस काम को वह भली प्रकार निभाय और मुझे कोई सन्देह नहीं है कि वे इसको निभायेंगे। सांकेतिक मांगों का ध्यान तो किया जाएगा, लेकिन सांकेतिक मांगों के साथ चालू वर्ष में प्रापण काम भी जल्दी शुरू कर दें, चाहे वह सर्वेक्षण का काम हो या कोई दूसरा काम हो। सर्वेक्षण की दृष्टि से, विचाराधारा की दृष्टि से, विचारों की दृष्टि से किस प्रकार प्रापण व्यय करते हैं, चाहे वह नई साधनों के लिए हो या किसी और बात के लिए, चाहे उस क्षेत्र के लिए हो जहां कि हमारे फौजी जवान लड़ रहे हैं या किसी दूसरे क्षेत्र के लिए, चाहे बोर्ड पर अपने कर्मचारियों को सहूलियत देने के लिए कोई कार्य हो या कोई दूसरा हो, इसका प्रापणको पूरा-पूरा ध्यान रखना चाहिये कि जितना धन प्रापण चाहते हैं उसके लिए कोई कारण विशेष भी हमें बतायें और बतायें कि इसलिए प्रापण उसको चालू करना चाहते हैं। मैं यह जरूर चाहता हूं कि विशेषकर वे क्षेत्र जो कि प्रथम क्षेत्र हैं, जहां युद्ध चल रहा है, और जहां प्रापणके स्टेशन हैं, उन स्टेशनों पर जो कर्मचारी काम करते हैं, चाहे वे चतुर्थ श्रेणी के हों या कोई और उनको युद्ध की स्थिति को ध्यान में रखते हुए प्रापण हथियार दें। उनको हथियारों से सुसज्जित करें ताकि वह दुश्मन से लड़ सकें, दुश्मन से लोहा ले सकें और दुश्मन का मुकाबला कर सकें।

इन शब्दों के साथ मैं प्रापण की पूरक मांगों का समर्थन करता हूं और यह जरूर समझता हूं कि ऐसे समय में जब कि देश पर युद्धकाल है, संकट है, रेलवे बलशाली ढंग से काम करेगी और उनके काम के द्वारा देश को एक ऐसी जीत हासिल होगी, जिम का श्रेय रेलवे को भी जायेगा।

16 hrs.

DETENTION OF MEMBER

(Shri Badrudduja)

Mr. Deputy-Speaker: I have to inform the House that the Speaker has received the following communication,

[Mr. Deputy-Speaker]

dated the 10th September, 1965, from the Assistant Secretary to the Government of West Bengal:—

"I have the honour to inform you that the Governor, in exercise of her power under rule 30 of the Defence of India Rules, 1962, has been pleased to direct that Syed Badrudduja, Member, Lok Sabha, be detained with a view to preventing him from acting in any

manner prejudicial to the defence of India and civil defence and the maintenance of public order. He has accordingly been taken into custody today in the morning and lodged in the Alipore Special Jail."

16.01 hrs.

The Lok Sabha then adjourned till Ten of the Clock on Tuesday, September 14, 1965/Bhadra 23, 1887 (Saka).
